गरीबी को बनाया हथियार समूह ने किया दर्द का उपचार

एक संपन्न परिवार की लड़की का विवाह गरीब परिवार में मात्र इस कारण से कर दिया गया कि वो अपनी तीन बहनों की अपेक्षा सुंदर नहीं थी. युवती से बड़ी दो बहनों की शादी हो चुकी थी और पिता ने अपने सबसे छोटी बेटी का रिश्ता करने में किसी प्रकार की कठिनाई ना आये इसलिए इस युवती की शादी एक ऐसे परिवार में करने के लिए राजी हो गये जिसकी आर्थिक स्थिति इस परिवार की अपेक्षा बहुत कमजोर थी. पिता की मजबूरी और अपनी बहन के रिश्ते में आती रुकावट को देखते हुए इस लड़की ने शादी की हामी भर दी.

वर्ष 2001 में युवती की शादी हो गयी और ससुराल जाने पर उसने पाया कि वहां की आर्थिक स्थिति जितना सोचा नहीं था उससे भी अधिक खराब है. खेती-बाड़ी से घर का खर्च चल रहा था. सास-ससुर अधिकतर बीमार ही रहते थे सो दवा-इलाज का खर्च अलग. युवती ने शादी के बाद के चार साल आर्थिक अभाव में गुजारे. लेकिन इस युवती ने वर्ष 2005 में समूह से जुड़ कर जिस तरह से अपने घर की आर्थिक स्थिति में बदलाव लाया वह अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा और एक बेहतरीन मिसाल है. रांची जिले के अनगड़ा प्रखंड के जर्राकोली गांव की इस महिला का नाम अनीता देवी है. ऐसी ही कुछ अन्य महिलाओं से इस संवाददाता की मुलाकात कम्युनिटी रिसोर्स पर्सन के प्रशिक्षण के दौरान हुई जो सफलता की अपने आप में एक अनोखा उदाहरण प्रस्तुत करती हैं. अनीता कहती हैं : हालत ऐसी थी कि साल में एक अच्छी साड़ी भी नहीं हो पाती थी. मायके से तेल, साबुन का इंतजाम होता था. दीदी के बच्चों के कपड़े अपने बच्चों को पहनाती थी. मां बाप पर निर्भर रहना अच्छा नहीं लगता था. अनीता बताती हैं कि गांव में समूह पहले से चल रहे थे, लेकिन समूह होता क्या है, कैसे काम करता है और इससे जुड़ने का क्या लाभ है इसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी. दूसरी महिलाओं की भी सलाह मिली कि समूह से जुड़ने से लाभ ही होता है. जब समूह से जुड़ी तो पता चला कि इसके क्या लाभ हैं. पहले से चल रहे समूह में सिलाई का प्रशिक्षण दिया जा रहा था तो किसी तरह यहां प्रशिक्षण प्राप्त किया. उसके बाद समूह से ऋण लेकर सिलाई मशीन खरीदी और सिलाई-कढ़ाई के काम को व्यावसायिक रूप दिया. साथ में खेती-बाड़ी के लिए भी ऋण लिया और अब तो पति भी खेती का प्रशिक्षण आजीविका के सहयोग से प्राप्त कर रहे हैं.

सक्रिया महिला के रूप में आंध्रप्रदेश भ्रमण का मिला मौका

अनीता ने समूह की एक सक्रिय महिला के रूप में पहचान बनायी और तब इनकी प्रतिभा को देखते हुए इन्हें समूह के गठन और संचालन करने संबंधी जानकारी हासिल करने के लिए आंध्रप्रदेश का भ्रमण करने का मौका मिला. यहां आंध्रप्रदेश में बनाये गये समूह की सक्रिय महिलाओं से काफी सूक्ष्मता से समूह संचालन पर जानकारी मिलने के साथ एक बेहतरीन मौका प्रशिक्षण के लिए मिला. सक्रिय महिला के रूप में पहचान स्थापित करने के बाद अब ये राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में समूह का गठन करवाने और समूह में शामिल महिलाओं को समूह के संचालन का प्रशिक्षण देने का काम भी कर रहीं हैं.

समूह का ऑडिट करने से मिला नया आत्मविश्वास

अनीता को वाणिज्यिक शब्दावली तथा ऐसे कामों की अच्छी जानकारी है. वो कहती हैं : बुंडू में नौ नये समूह बनाये और तीन पुराने समूहों को प्रशिक्षण देने के साथ उनमें से दो समूहों का ऑडिट भी किया. उनसे यह पूछे जाने पर कि ऑडिट करना क्या है वह फटाफट जवाब देती हैं कि समूह का रजिस्टर देखना, पासबुक देखना, प्राप्ति और भुगतान की जांच, आय और व्यय, संपत्ति और दायित्व आदि की जांच आदि ऑडिट के काम के अंतर्गत आते हैं. अनीता ने महज मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की है, लेकिन वाणिज्यिक ज्ञान इनके व्यक्तित्व को और भी प्रभावशाली बना देता है. अनीता से यह सवाल किये जाने पर कि आज आपके पिता की आपके के बारे में क्या सोच है, वह कहती हैं : पिता जी कहते हैं कि जिसको नजरअंदाज किया वही आगे निकला और गर्व करते हैं. अच्छा लगता है. अनीता का लक्ष्य अब गांव की महिलाओं को समूह से जोड़ कर उनकी गरीबी दूर करना है और यह काम उन्हें गहरा आत्मसंतुष्टि देता है.

समूह से सीखी साप्ताहिक बचत

गरीबी से जुड़ी एक दास्तान और इसके खिलाफ लड़ी गयी जंग अनगड़ा प्रखंड की एक और अनीता देवी की भी है. ये संयोग ही था कि साक्षात्कार किये गये दोनों महिलाओं का नाम समान है. अनीता बताती हैं कि पालन पोषण में कभी कोई कमी नहीं हुई थी, लेकिन शादी के बाद ससुराल में आर्थिक कमी के कारण जीना आसान न था. लेकिन पति का घर कुछ भी हो लड़की का अपना घर हो जाता है. अनीता ने एक विश्वास के साथ अपने घर को समेटना प्रारंभ किया. उस घर में खुशहाली लाने का हर संभव प्रयास करने लगीं. और, इस प्रयास में झारखंड आजीविका मिशन ने साथ दिया. अनीता बताती हैं कि पति की एक बार बहुत ज्यादा तबीयत खराब हो गयी थी. पैसे नहीं थे. अंततः सोने की कान की बाली बेचनी पड़ी और पति का इलाज कराया. इसी दरम्यान एक महिला ने समूह की चर्चा की तब समूह के बारे में जाना. समूह बनाने की जानकारी लेकर जब मुहल्ले की महिलाओं से मिली और यह बताया कि समूह क्या होता है, कैसे काम करता है, किस प्रकार साप्ताहिक 10 रुपये बचत की जा सकती है तो महिलाओं का जवाब था कि इतनी बचत से क्या होगा और इस योजना को नकार दिया. तब दूसरे मुहल्ला और टोलों में गयीं और बताया कि समूह बनायें और बचत करें. कुछ महिलाएं समूह बनाने के लिए तैयार हो गयीं. वर्ष 2008 में समूह खड़ा कर दिया गया था और ऋण के लेन-देन का काम प्रारंभ किया गया.

सक्रिय महिला के रूप में पहचान स्थापित कर ये महिलाएं ग्रामीण क्षेत्रों में समूह संचालन का दे रही हैं प्रशिक्षण

ऋण का लेनदेन करने और साप्ताहिक बचत से बढ़ी है जानकारी के साथ आत्मविश्वास भी

समझा एक कदम आगे बढ़ना क्या है

समूह बनाकर अनीता ने ऋण का लेन-देन किया जो काफी सफल रहा. ऋण लेनदेन की समझ आयी और आत्मविश्वास बढ़ा. तब समूह से 10,000 रुपया ऋण लिया और पति के पुराने दुकान में पूंजी लगायी. पूंजी लगाने से दुकान में सुधार आया. वह कहती हैं कि मसाले की हमारी दुकान थी ही उसके बाद बढ़ाने के उद्देश्य से पति के लिए एक पुराना स्कूटर भी खरीदा जिसके लिए समूह से ही पैसा ऋण के तौर पर लिया था. अब पति दूर के हाट बाजार में भी जाने लगे. जब इस ऋण को वापस जमा करने का समय आता तो अनीता को हमेशा यह अहसास होता कि उन्होंने एक कदम आगे बढ़ाया है. वह कहती हैं : हम पति-पत्नी मेल से काम करते हैं, खर्च कम किया और बचत अधिक. इसके बाद एक पुराना ऑटोरिक्शा खरीदा. पति ऑटोरिक्शा भी चलाते हैं तो एक समय ऑटोरिक्शा चला कर अर्जित की जाने वाली राशि को समूह का ऋण चुकाने में दिया जाता था. अनीता ने समूह से जुड़ कर एक सफल उद्यमी के रूप में पहचान बनायी है. वे अपने समूह की पुस्तक संचालन का भी काम करती हैं. उनके शब्दों हैं : समूह मां की तरह है. जिस तरह बच्चा की आंखों से आंसू निकलता है तो मां अपने आंचल से पोछ देती है, उसी तरह तकलीफ के समय समूह एक मां की तरह ख्याल रखती है.

आजीविका से आयी महिलाओं के जीवन में खुशहाली

राज्य में ऐसी कई महिलाएं समूह की सक्रिय महिला के रूप में अपनी अलग पहचान बनायी है. झारखंड राज्य आजीविका मिशन की सहायता से इन महिलओं का राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में समूह के गठन के साथ ग्रामीण संगठन के निर्माण में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहीं हैं. रांची जिले के साथ पूर्वी सिंहभूम के कई ग्रामीण क्षेत्रों में समूह से जुड़ी महिलाओं ने अपने जीवन में एक सकारात्मक बदलाव लाया है. आजीविका के राज्य प्रमुख बताते हैं कि रांची जिले में लगभग 700 समूहों का संचालन हो रहा है, जिसमें औसतन 13 महिलाएं शामिल हैं. राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के नये फोल्ड में आने के बाद यदि इस संख्या को राज्य स्तर पर देखा जाये तो 60,500 महिलाएं 5500 समूहों के माध्यम से आजीविका प्राप्त कर रही है और इन महिलाओं को समय समय पर कई तरह से ऋण लेन देन के प्रशिक्षण दिये जा रहे हैं. इनमें रिवालविंग फंड तथा सीआइएफ फंड शामिल है.

आजीविका मिशन की सहायता से इन समूहों को और अधिक शक्ति प्रदान करने के उद्देश्य से ग्राम संगठन का निर्माण किया गया है. अब समूह को और अधिक ऋण मिल सकेगा. ग्राम संगठनों को ऋण लेनदेन के अलावा अन्य सामाजिक जिम्मेवारियों को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया जायेगा. रांची की अनगड़ा, नामकुम तथा अन्य प्रखंडों तथा सिंहभूम के मनोहरपुर आदि प्रखंडों की महिलाएं ग्राम संगठन के विषय पर जानकारी बटोर रहीं हैं. इन महिलाओं ने न सिर्फ अपनी जिंदगी में बदलाव लाया है, बल्कि दूसरों को भी लाभ पहुंचाया है.

चीन ने आश्चर्यजनक रूप से 1990 में 10 प्रतिशत विकास दर हासिल कर ली थी. आधुनिक विश्व के इतिहास में यह सर्वाधिक है. चीन ने आयात-निर्यात को काफी बढ़ाया और उसकी अर्थव्यवस्था में उसकी हिस्सेदारी तीन चौथाई के आसपास हो गयी. यह दुनिया के नयी औद्योगिक अर्थव्यवस्था वाले देशों से काफी अधिक है.